‘अन्धा युग’ : कथ्य एवं शिल्प

डॉ. गरिमा तिवारी
(सहायक प्राध्यापक)
हिंदी विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी - ८४५४०१, बिहार
E-mail: garimatiwari@mgcub.ac.in

HIND4007: हिंदी नाटक एवं रंगमंच

विषय-सूची

- धर्मवीर भारती : एक सामान्य परिचय
- 'अन्धा युग' : एक मिथकीय आख्यान का पुनर्सृजन
- 'अन्धा युग' की प्रासंगिकता
- 'अन्धा युग' की प्रतीकात्मकता
- 'अन्धा युग' का शिल्प पक्ष
- निष्कर्ष

धर्मवीर भारती : एक सामान्य परिचय

- धर्मवीर भारती (२५ दिसम्बर १९२६ – ०४ सितम्बर १९९७) हिंदी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, संपादक एवं सामाजिक विचारक थे।

- उनका आधुनिक साहित्य की लगभग सभी विधाओं कविता, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, रिपोर्ताज, आलोचना, एकांकी, यात्रा-वृतांत, पत्र साहित्य पर एक समान अधिकार था।

- उनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं –

  कविता : ठंडा लोहा, अन्धा युग, सात गीत वर्ष, कनुप्रिया

  उपन्यास: गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोड़ा

  निबन्ध: ठेले पर हिमालय, पश्यन्ति, कहनी अनकहनी, कुछ चेहरे कुछ चिंतन, शब्दिता

  रिपोर्ताज: युद्ध यात्रा, मुक्त क्षेत्रे युद्ध क्षेत्रे

  आलोचना : प्रगतिवाद-एक समीक्षा, मानव मूल्य और साहित्य

  यात्रा-वृतांत: यात्रा चक्र

  पत्र संकलन : अक्षर अक्षर यज्ञ

- धर्मवीर भारती की प्रसिद्धि का आधार उनका उपन्यास 'गुनाहों का देवता' (१९४९) माना जाता है।

- इन्होंने 'धर्मयुग' नामक साप्ताहिक साहित्यिक पत्रिका के प्रधान संपादक का दायित्व भी निभाया।

- धर्मवीर भारती द्वारा हिंदी साहित्य के क्षेत्र में उनके अविस्मरणीय योगदान के कारण उन्हें सन १९७२ में 'पद्म श्री' से सम्मानित किया गया।

- अपने विविधतापूर्ण लेखन से धर्मवीर भारती जी ने हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है।

'अन्धा युग' : एक मिथकीय आख्यान का पुनर्सृजन

- 'मिथक' शब्द यूनान के 'मिथ' शब्द से बना है। मिथक दन्त कथा, धार्मिक कथा, पुराख्यान का पर्याय है।
- मिथक देश कालातीत होते हैं और किसी भी जाति की संस्कृति का आधार होते हैं। लेखक जनमानस में व्याप्त इन मिथकों का प्रयोग अपने युग के यथार्थ को व्यक्त करने के लिए करता है और यही इन मिथकों की प्रासंगिकता कहलाती है।
- 'अन्धा युग' डॉ. धर्मवीर भारती द्वारा सन १९५४ में लिखा गया एक गीति नाट्य है।
- इस नाटक की कथावस्तु का आधार भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर 'महाभारत' है।
- नाटक के प्रारंभ में ही धर्मवीर भारती ने 'अन्धा युग' के कथा स्रोत का उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है – "इस दृश्य-काव्य ने जिन समस्याओं को उठाया गया है उनके सफल निर्वाह के लिए महाभारत के उत्तरार्द्ध की घटनाओं का आश्रय ग्रहण किया गया है। अधिकतर कथावस्तु प्रख्यात है केवल कुछ ही तत्व उत्पाद्य हैं – कुछ स्वकल्पित पात्र और कुछ स्वकल्पित घटनाएँ।"

- उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि भारती जी ने महाभारत की कथा का आधार ग्रहण कर, निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति हेतु उसमें अपनी कल्पना शक्ति का यत्किंचित समावेश कर अन्धा युग नाटक का पुनर्सृजन किया है।

- महाभारत की मिथकीय कथा का पुनर्सृजन कर नाटककार ने अपने युग की ज्वलंत समस्या और संवेदना को व्यक्त किया है।

- 'अन्धा युग' में महाभारत के अंतिम दिन के युद्ध की संध्या से कृष्ण की मृत्यु तक की घटनाओं का लेखक ने किंचित परिवर्तन के साथ चित्रण किया है।

- क्योंकि लेखक का उद्देश्य महाभारत की कथा दोहराना नहीं है बल्कि उसका उद्देश्य व्यास के माध्यम से अपनी कथा कहना है – यह कथा ज्योति की है, अन्धों के माध्यम से।

'अन्धा युग' की प्रासंगिकता

- 'अन्धा युग' सन १९५४ में लिखा गया नाटक है।

- महाभारतकालीन कथानक के पौराणिक मिथक को धर्मवीर भारती ने विश्वयुद्धेत्तर सन्दर्भों में रखकर तत्कालीन बुनियादी सवालों से रूबरू होने का प्रयास किया है।

- दो विश्व युद्धों से उत्पन्न मानवीय मूल्यों के विघटन की समस्या को भी उजागर किया गया है जो मनुष्य को नरपशु में तब्दील कर देती है और हम एक ऐसे ही अंधे युग में जीने को अभिशप्त हो जाते हैं, जैसा कि धर्मवीर भारती ने नाटक के प्रारंभ में ही लिखा -

'युद्धोपरांत
यह अन्धा युग अवतरित हुआ
जिसमें स्थितियाँ, मनोवृत्तियां, आत्माएं सब विकृत हैं।'

- 'अन्धा युग' नाटक का प्रारंभ महाभारत के युद्ध की अंतिम संध्या से होता है और उसके पश्चात् पूरे नाटक में इस युद्ध के दुष्परिणामों का ही चित्रण है।

- धर्मवीर भारती जी ने महाभारत के युद्ध के परिणामों की चर्चा बीसवीं शताब्दी के विश्व युद्धों के परिणामों के सन्दर्भ में की है और इसीलिए महाभारत की कथा का यह मिथकीय आख्यान वर्तमान के परमाणु हथियार संपन्न देशों की विवेकशून्यता के कारण उत्पन्न मनुष्य की अस्मिता के संकट एवं प्रत्येक राष्ट्र के समक्ष उपस्थित अनेकानेक संकटों को समेटता है।

- 'अन्धा युग' को हम मानवीय मूल्यों के विघटन एवं उस विघटन के परिणामस्वरूप मनुष्यता के सम्मुख उपस्थित सांस्कृतिक संकट के आख्यान के रूप में भी देख सकते हैं।

- इस प्रकार हम कह सकते हैं कि धर्मवीर भारती ने महाभारत की पौराणिक कथा का आधार अपने युग के यथार्थ को अभिव्यक्त करने के लिए ही लिया है और आधुनिक विश्व युद्धों के परिणामस्वरूप मनुष्य की नियति को प्रकट किया है।

'अन्धा युग' की प्रतीकात्मकता

- धर्मवीर भारती जी ने अन्धा युग नाटक के अधिकांश ऐतिहासिक पात्रों का प्रतीकात्मक चित्रण किया है जिससे ये पात्र किसी विशेष मनोवृत्ति, दृष्टिकोण के प्रतीक के रुप में उभरे हैं।

- इस नाटक का एक महत्वपूर्ण पात्र 'अश्वत्थामा' है जो प्रत्येक युद्धों में संत्रास को झेलने वाले एक सम्पूर्ण वर्ग का प्रतीक है। एक ऐसा वर्ग जिसकी आत्मा युद्धों के कारण छलनी हो गयी है। युद्ध ने उसे नरपशु में तब्दील कर दिया है और वह आज के आधुनिक नरपशुतुल्य मनुष्य का प्रतीक बन गया है।

- संजय एक ऐसे विवेकशील किन्तु तटस्थ आधुनिक मानव का प्रतीक है जो सत्य और असत्य का विभेद जानकर भी सत्य का पक्ष नहीं ले पाता और मानसिक प्रताड़ना झेलता है।

- युयुत्सु एक ऐसे पात्र का प्रतीक है जो आस्था और अनास्था के बीच झूलता रहता है और अंत में आत्महत्या कर लेता है।

- युधिष्ठिर और धृतराष्ट्र एक ऐसे वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सत्ता के मोह में मदांध होकर सम्पूर्ण मानवता को खतरे में डाल देते हैं।

- 'अन्धा युग' नाटक के प्रहरी सामान्य मनुष्य के प्रतीक हैं जिन्हें युद्धों से कुछ लाभ नहीं होता वरन वे सिर्फ अपने शासकों की स्वार्थलिप्सा का दुष्परिणाम भोगते हैं।

- धृतराष्ट्र और गांधारी मानव मन की अंध मनोवृत्ति का प्रतीक हैं।

- श्री कृष्ण उस आधुनिक युद्ध पीड़ित मनुष्य के प्रतीक हैं जो यह मानता है कि पीड़ा झेलना उसकी नियति है और उसका उद्धार उसके अपने ही कर्मों से होगा।

- इस प्रकार हम देखते हैं कि 'अन्धा युग' नाटक के अधिकांश पात्र प्रतीकात्मक हैं।

अन्धा युग का शिल्प पक्ष

- 'अन्धा युग' एक गीति नाट्य है अतः इसकी भाषा में काव्यात्मकता, सरलता, सहजता, बोधगम्यता, नाटकीयता आदि सभी गुण मौजूद हैं।

- श्री नेमिचन्द्र जैन के अनुसार – 'अन्धा युग की उपलब्धियों में सबसे महत्वपूर्ण इसकी भाषा है जिसमें बिम्बप्रधानता और भावतीव्रता के साथ बोलचाल की सहजता और प्रवाह है, गति और लय की विविधता है।'

- 'अन्धा युग' नाटक की भाषा में बिम्ब, प्रतीक, अलंकार और लय आदि का सम्मिश्रण है।

- इस नाटक की भाषा में लय का एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

टुकड़े-टुकड़े हो बिखर चुकी मर्यादा
उसको दोनों ही पक्षों ने तोड़ा है
पांडव ने कुछ कम कौरव ने कुछ ज्यादा
यह रक्तपात अब कब समाप्त होना है।

- निःसंदेह अन्धा युग नाटक कथ्य और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से धर्मवीर भारती की अप्रतिम रचना है।

निष्कर्ष

- 'अन्धा युग' नाटक महाभारत की कथा का आधार ग्रहण कर विश्व युद्धों की विभीषिका तथा उसके दुष्परिणामों से अवगत करने वाली, आधुनिकताबोध से संपन्न नाट्यकृति है।

- नाटककार ने इस नाटक में महाभारत के युद्ध के उपरांत उपस्थित होने वाली समस्याओं को आधुनिकता बोध के परिप्रेक्ष्य में उपस्थित किया है और यही इस नाटक की मूल संवेदना है।

- 'अन्धा युग' नाटक के प्रतिपाद्य पर डॉ. सुरेश गौतम का यह कथन अत्यंत उचित ही जान पड़ता है – 'धर्मवीर भारती ने अन्धा युग में पात्रों, प्रसंगों को उनके ऐतिहासिक परिवेश में सुरक्षित रखकर आधुनिक मनोविज्ञान और समाज शास्त्र के विकीर्ण प्रकाश में उन्हें नयी व्याख्याओं की भावभूमि से बांधकर नवीनता का स्पर्श दिया। अपनी आधुनिक संवेदना को वाणी देने के लिए इतिहास की समस्त सामग्री और सम्पूर्ण स्वर को समेटकर आधुनिक काल से सम्बद्ध कर सफलता प्राप्त की।'

- भारती जी की स्वचेतना का मानदंड यही है कि उन्होंने इतिहास पर वर्तमान को कहीं भी भार न बनाकर इतिहास को वर्तमान के अनुकूल बना दिया। इसीलिए महाभारत का विनाशक युद्ध अन्धा युग की ठोस पृष्ठभूमि मात्र नहीं रहता, एक प्रतीक बन जाता है – आधुनिक युग के अंधेपन का प्रतीक।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1. 'अन्धा युग' – धर्मवीर भारती, किताब महल प्रकाशन

2. हिंदी नाटक – डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, तीसरा संस्करण (२०१८)

3. बीसवीं शताब्दी का हिंदी नाटक और रंगमंच – गिरीश रस्तोगी, भारतीय ज्ञानपीठ, तीसरा संस्करण (२०१८)

4. हिंदी नाटक उद्भव और विकास – डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल प्रकाशन, संस्करण (२००८)

धन्यवाद